अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ – जैन धर्म मध्यमा (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) ज्ञान के अतिचारों का पाठ है-

(क) इच्छामि ठामि (ख) आगमे तिविहे का पाठ

(ग) इच्छामि णं भंते (घ) दर्शन सम्यक्त्व का पाठ ( )

(b) साधु साध्वियों की अविनय आशातना के लिए क्षमा याचना करने का पाठ है-

(क) तस्स सव्वस्स (ख) दंसण समत्त का पाठ

(ग) इच्छामि खमासमणो का पाठ(घ) इच्छामि ठामि का पाठ ( )

(c) ''तृष्णा पर अंकुश लगाने हेतु'' दिशाओं में गमनागमन की मर्यादा के लिए व्रत है-

(क) दिशिव्रत (ख) परिग्रह विरमण व्रत

(ग) उपभोग परिभोग व्रत (घ) अनर्थदण्ड विरमण व्रत ( )

(d) प्रत्याख्यानावरण कषाय में मरने वाला जीव गति प्राप्त करता है-

(क) देवगति (ख) नरकगति

(ग) मनुष्यगति (घ) तिर्यंचगति ( )

(e) वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति है-

(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) 12 मुहूर्त्त

(ग) आठ मुहूर्त्त (घ) एक मुहूर्त्त ( )

(f) संज्ञा का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-

(क) उत्तराध्ययन सूत्र (ख) दशवैकालिक सूत्र

(ग) अनुयोग द्वार सूत्र (घ) पन्नवण्णा सूत्र ( )

(g) भगवान शान्तिनाथ जी ने किस नक्षत्र में केवलज्ञान और केवल दर्शन प्राप्त किया-

(क) स्वाति नक्षत्र (ख) भरणी नक्षत्र

(ग) पुष्य नक्षत्र (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(h) ''मेरे अन्तर भया प्रकाश'' नामक प्रार्थना के रचयिता हैं-

(क) आचार्य हस्ती (ख) आचार्य हीरा

(ग) उपाध्याय मान (घ) गौतम मुनि ( )

(i) धोवन पानी कितने प्रहर उपरान्त काम में नहीं लिया जाता है-

(क) 3 प्रहर (ख) 4 प्रहर

(ग) 5 प्रहर (घ) 2 प्रहर ( )

(j) वनस्पतिकायिक जीवों के कुल भेद हैं-

(क) 2 (ख) 3

(ग) 4 (घ) 6 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) ज्ञान के 14 अतिचार होते हैं। ( )

(b) ''उपभोग-परिभोग अधिक बढ़ाया हो'' दसवें व्रत का अतिचार है। ( )

(c) चौदहवाँ पाप स्थान परपरिवाद है। ( )

(d) पौषध कम से कम 5 प्रहर के लिए ग्रहण किया जाता है। ( )

(e) दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियाँ होती हैं। ( )

(f) 'संज्वलन मान' पानी में खींची गई लकीर के समान है। ( )

(g) जीव के द्वारा ग्रहण किये हुए कर्म पुद्गलों में भिन्न-भिन्न स्वभाव का होना प्रकृति बंध है। ( )

(h) असाता वेदनीय कर्म 12 प्रकार से बंधता है। ( )

(i) सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी हैं। ( )

(j) मेघरथ का जीव सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न हुआ। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	केश वाणिज्जे	(क) 99	.....
(b)	मरणासंसप्पओगे	(ख) उपवास	.....
(c)	पमायायरिये	(ग) दर्शनावरणीय प्रकृति	.....
(d)	अतिचार	(घ) अनर्थदण्ड विरमण व्रत	.....
(e)	अरति	(च) पाँच	.....
(f)	गर्म	(छ) जमीकन्द	.....
(g)	विगय	(ज) स्पर्श	.....
(h)	स्त्यानगृद्धि	(झ) नो कषाय मोहनीय	.....
(i)	अभत्तट्ठं	(य) संलेखणा का अतिचार	.....
(j)	रतालू	(र) कर्मादान	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मेरा एक अतिचार 'मोसोवएसे' है। .....

(b) मैं तीसरा आवश्यक हूँ। .....

(c) मैं सातवें व्रत का 25वाँ बोल हूँ। .....

(d) मैं ज्ञानावरणीय कर्म की पाँचवीं प्रकृति हूँ। .....

(e) मैं संस्थान का तीसरा भेद हूँ। .....

(f) मैं मोहनीय कर्म की मुख्य प्रकृतियों का दूसरा भेद हूँ। .....

(g) मेरे प्रभाव से जीव उच्च-नीच कुलों में उत्पन्न होता है। .....

(h) मेरे धर्म परिवार में 36 गणधर थे। .....

(i) 'खाने के लिए तू दूसरी वस्तु से भी अपना पेट भर सकता है।' किसने कहा?.....

(j) 'नींव खुदवाना' मेरी विराधना है। .....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - **12x2 = (24)**

(a) तीसरे स्थूल के दो अतिचार लिखिए।

.....

.....

.....

(b) तस्स सव्वस्स का मूल पाठ लिखिए।

.....

.....

.....

(c) नवमें सामायिक व्रत के पाँच अतिचार लिखिए।

.....

.....

.....

(d) प्रायश्चित्त का मूल पाठ लिखिए।

.....

.....

.....

(e) प्रतिक्रमण का मूल नाम क्या है ?

.....

.....

.....

(f) संवर तत्त्व किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(g) **8 प्रत्येक प्रकृति के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **मनुष्यायु बंध के चार कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

(i) **भगवान शान्तिनाथजी का विवाह कब तथा किसके साथ हुआ ?**

.....

.....

.....

(j) **भगवान शान्तिनाथजी के जीवन से मिलने वाली दो शिक्षा लिखिए।**

.....

.....

.....

(k) **सचित्त-अचित्त की परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

.....

(l) **जमीकन्द का त्याग क्यों किया जाना चाहिए ?**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) **लक्षण किसे कहते हैं ? इसके भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **इच्छामि णं भंतो का पाठ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **दसवां देशावगासिक व्रत के पाँच अतिचार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **दंसण समत्त पाठ के पाँच अतिचार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **सिद्धों के आठ गुण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **आठ सम्पदा के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **ग्यारह अंगों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **गुणस्थान किसे कहते हैं ? मिथ्यात्व गुणस्थान को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **भगवान शान्तिनाथ जी के निर्वाण के बारे में लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

काल.....

.....

.....

.....

.....

.....**नाश।।**

(k) **लिया तुम्हारा**.....

.....

.....

.....

.....

..... **.विजय दिलाओ।।**

(l) **बोधि**.....

.....

.....

.....

.....

..... **.बरसाओ।।**